

मजबूत होते भारत-कुवैत द्विपक्षीय संबंध

हा ल ही में भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की ऐतिहासिक कुवैत यात्रा से दोनों देशों के बीच

सुनील कुमार महला

प्रधानमंत्री मोदी की यात्रा ने
निस्चयदेह कुर्वैत व भारत के
संबंधों को ऊंचाइयों पर पहुंचाने
का काम किया है। उनकी यह
यात्रा निश्चित ही खाड़ी थेट्र में
एक जिम्मेदार साझेदार के रूप
में भारत की स्थिति को मजबूत
करेगी। सच तो यह है कि
भारतीय प्रधानमंत्री का कुर्वैत
दौरा भारत और खाड़ी देशों के
बीच बढ़ते संबंधों की यात्रा है।

बाप बढ़त सबधा का यात्रा म
एक अहम मील का पत्थर
साबित होगा। यह दौरा
कूटनीति, व्यापार और समुदाय
संवाद की दृष्टि से अत्यंत
महत्वपूर्ण है जो भारत और
कुवैत के द्विपक्षीय रिश्तों को
जहां एक ओर मजबूती प्रदान
करेगा वहीं दूसरी ओर यह
दोनों देशों के बीच भविष्य में
सहयोग की रूपरेखा भी तय
करेगा।



कार्यक्रम की शुरूआत किया जाना निश्चित रूप से यह दर्शाता है कि कुवैत के लिए प्रवासी भारतीय कितने महत्वपूर्ण और अहम् हैं। इतना ही नहीं, गत जून में कुवैत को एक झारत में आग लगने से हुई भारतीयों की मौतों के बाद कुवैत ने जिस तरह का सहयोग दिया, वह भी दोनों देशों के मजबूत संबंधों को ही दर्शाता है।

अपनी यात्रा के दैरान प्रधानमंत्री ने प्रवासियों को बेहतर वाणिज्यिक सेवाओं और श्रमिकों के अधिकारों की सुरक्षा का सकारात्मक व ठोस आश्वासन दिया है, जो विदेशों में अपने नागरिकों के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। निश्चित ही इससे कुवैत में प्रवासी भारतीयों के आत्मविश्वास में बढ़ोत्तरी होगी। यहां यह भी महत्वपूर्ण है कि पीएम मोदी की इस ऐतिहासिक दो दिवसीय कुवैत यात्रा के दैरान भारत और कुवैत ने संबंधों को 'रणनीतिक साझेदारी' तक बढ़ाने पर सहमति जताई है और रक्षा क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग को नियमित बनाने के लिए एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए हैं। यह और भी अधिक महत्वपूर्ण है कि ऊर्जा सहयोग को बढ़ाने के उद्देश्य से दोनों पक्षों ने इस बात पर जोर दिया है कि वे अपने-अपने देशों की कंपनियों को तेल और गैस के अन्वेषण तथा उत्पादन, रिफाइनिंग, इंजीनियरिंग सेवाओं, और 'पेट्रोकेमिकल' उद्योगों में सहयोग बढ़ाने के लिए समर्थन प्रदान करेंगे।

अंत में, यही कहूंगा कि प्रधानमंत्री मोदी की यात्रा ने निस्सदैन कुवैत व भारत के संबंधों को ऊंचाइयों पर पहुंचाने का काम किया है उनकी यह यात्रा निश्चित ही खाड़ी क्षेत्र में एक जिम्मेदार साझेदार के रूप में भारत की स्थिति को मजबूत करेगी। सच तो यह है कि भारतीय प्रधानमंत्री का कुवैत दौरा भारत और खाड़ी देशों के बीच बढ़ते संबंधों की यात्रा में एक अहम मील का पथर साबित होगा। यह दौरा कूटनीति, व्यापार और समुदाय संवाद की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है जो भारत और कुवैत के द्विपक्षीय रिश्तों को जहां एक ओर मजबूती प्रदान करेगा वहीं दूसरी ओर यह दोनों देशों के बीच भविष्य में सहयोग की रूपरेखा भी तय करेगा।

संपादकीय

प्रत्यर्पण पर सवाल

बांग्लादेश की अंतरिम सरकार ने भारत को एक कूटनीतिक संदेश सभा भेज कर अब्दुस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना के प्रत्यर्पण की मांग की है। भारत और बांग्लादेश के बीच 2013 में सीमाओं पर उग्रवाद और आतंकवाद से निपटने के लिए प्रत्यर्पण संधि हुई थी। दोनों देशों ने वार्षित भगोड़ों के आदान-प्रदान की प्रक्रिया को और अधिक सहज बनाने के उद्देश्य से 2016 में संधि को संशोधित किया। लेकिन दोनों देशों के बीच प्रत्यर्पण संधि लागू होने का यह अर्थ नहीं है कि भारत शेख हसीना को अधियोजन का सामान करने के लिए बांग्लादेश की सरकार को सौंप देगा। इस संधि में से प्रावधान हैं, जिसके आधार पर भारत शेख हसीना के प्रत्यर्पण की मांग को टुकरा सकता है। संधि का अनुच्छेद 8 में यह प्रावधान है कि यदि आरोप भले ही राजनीतिक प्रकृति का है, लेकिन न्याय के हित में सञ्चालना पूर्ण नहीं लगाया गया है अथवा यदि इसमें सैन्य अपराध शामिल हैं, जिन्हें सामान्य अपराधी



ललित गगे

बा लीवुड में समानांतर सिनेमा के जनक, 'मंथन' से लेकर 'वैलडन अब्बा' तक जिनके फिल्मी सफर को एक युग कहा जा सकता है, बेहद कलात्मक, बेहद संजीवा, बेहद संवेदनशील, ऐसे बेमिसाल फिल्मकार श्याम बेनेगल का 90 वर्ष की उम्र में जाना अत्यंत दुखद ही नहीं है, एक सार्थक भारतीय सिनेमा एवं गौरवशाली टेलीविजन युग का अंत है। दादा साहब फाल्के के अलावा सात राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित बेनेगल ने हिंदी सिनेमा को नसीरुद्दीन शाह, ओमपुरी, स्मिता पाटिल, अमरीश पुरी, अनन्त नगा जैसे प्रख्यात कलाकार दिए। उनको फिल्मों के साथ भारतीय सिनेमा का एक नया और अविस्मरणीय दौर शुरू हुआ, जिसने भारतीय सिनेमा को एक नई ऊँचाई प्रदान की। पिता के कैमरे से 12 साल की उम्र में पहली फिल्म बनाने वाले बेनेगल ने उस समय अहसास कराया कि भारतीय सिनेमा में एक विराट प्रतिभा मोर्चा संभाल चुकी है, जिसके काम की गंज उनकी जीवन में ही नहीं, बल्कि भविष्य में लाख्य समय तक देश और दुनिया को सुनाई देगी। जब-जब हमने बहुत ठहरकर, बहुत संजीदगी के साथ उनके काम को देखा तो अनायास ही हमें महसूस हुआ कि वे अपने आप में कितना कुछ समेटे हुए थे, अद्भुत, यादगार एवं विलक्षण। सिनेमा दर्शकों का ऐसे महान फिल्मकार की फिल्मों से अनभिज्ञ रहना इस संसार में रहते हुए भी सूर्य, चन्द्रमा एवं तारों को न देखने जैसा है। श्याम बेनेगल का जन्म 14 दिसम्बर 1934 को हैदराबाद में हुआ। हैदराबाद की ओसमानिया यनिवर्सिटी से इकोनोमिक्स में एमए करने के बाद बेनेगल ने आगे जाकर हैदराबाद फिल्म सोसायटी की स्थापना की। उनका संबंध कोंकणी बोलने वाले चित्रपुर सारस्वत परिवार से था। उनका असली नाम श्याम सुंदर बेनेगल था। श्याम बेनेगल की शादी नीरा बेनेगल से हुई थी और उनकी एक बेटी पिया बेनेगल है, जो एक कॉस्ट्र्यूम डिजाइनर हैं, जिन्होंने कई

कर दिया। इस पूरे घटनाक्रम में अमेरिका, पश्चिमी देश और वहाँ की सेना ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कहने के लिए अंतर्रिम सरकार के मुखिया मोहम्मद युनूस एक उदारवादी और लोकतांत्रिक व्यक्ति हैं, लेकिन वास्तविक अर्थों में वह एक कठपुतली हैं जो इस्लामी कट्टरपंथियों के इशारे पर नाच रहे हैं। आज के आधुनिक युग में लोकतंत्र के प्रतिष्ठित मूल्य समानता, धर्मनिरपेक्षता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता आदि में धार्मिक कट्टृता का कोई स्थान नहीं है। जिन कट्टरपंथी तत्त्वों से बांग्लादेश को वर्तमान सत्ता निर्मित हुई है उसे हतोत्सवित किया जाना चाहिए। बांग्लादेश की धार्मिक अल्पसंख्यक विरोधी रु झान ने आखिर में अमेरिका की भी चिंता बढ़ा दी है। वहाँ के सुरक्षा सलाहकार जैक सुलिवन ने यूरस से हिन्दुओं के विरुद्ध होने वाले हिंसा को तुरंत रोकने का आग्रह किया है। ये सभी ऐसे कारण हैं जो हसीना के प्रत्यर्पण को ठुकराने के पर्याप्त आधार उपलब्ध कराते हैं।



3

गु रु गोविंद सिंह जी के प्रकाश पर्व के दिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 9 जनवरी 2022 को यह घोषणा की थी कि, 26 दिसंबर को श्री गुरु गोविंद सिंह के पुत्रों साहिबजादे बाबा जोरावर सिंह जी और बाबा फतेह सिंह जी की शहादत की स्मृति और सम्मान में राष्ट्रीय 'वीर बाल दिवस' मनाया जाएगा। उल्लेखनीय रहे मुगल खासनकाल के दौरान पंजाब में सिखों के 10 वें गुरु, श्री गुरु गोविंद सिंह के चार बेटे थे। गोविंद सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना की। धर्मिक उत्तीड़न से लोगों की रक्षा करने के उद्देश्य से इसकी स्थापना की गई थी। श्री गुरु गोविंद सिंह चार बेटे: अजीत, जुझार, जोरावर और फतेह, सभी खालसा का हिस्सा थे। उन चारों को 19 वर्ष की आयु से पहले मुगल सेना द्वारा मार डाला गया था। गुरु

दखा कि वहाँ काइ आर ता नहीं ह? जाऊ, कुछ दर के लिए वटवृक्ष की छाया में बैठकर सोचो। थोड़ी देर बाद आना। वह व्यक्ति वटवृक्ष की छाया में बैठकर ध्यान करने लगा। जब उसने आंखें बंद की तो उसे अपने बृद्ध माता-पिता, पत्नी और बच्चों की छवि नजर आने लगी। वह चिंतित हो गया। घबराकर उसने अपनी आंखें खोलीं तो फकीर को अपने पास खड़ा पाया। व्यक्ति ने कहा, मैं तो अपना परिवार, नाते-रिश्ते सब पीछे छोड़ आया था, लेकिन यहाँ पर आंखें बंद करते ही उनकी छवि सामने धूम रही है। इस पर फकीर बोले, ध्यानमग्न होकर उन व्यक्तियों को अपने दिमाग से निकालने का प्रयत्न करो। कुछ देर बाद मेरे पास आना। दो घंटे बाद युवक ने फकीर का दरवाजा खटखटाया तो फकीर बोले, कौन है? युवक बोला, मैं हूं। फकीर ने कहा, अभी भी तुम अकेले नहीं हो। तुम्हारा मैं तुम्हरे साथ है। अगर तुम इस मैं और भीड़ को छोड़ सको तो फिर यहाँ आने की जरूरत ही नहीं रह जाएगी। तुम मैं से मुक्ति पा लो तो फिर संन्यास लेने का भी कोई अर्थ नहीं रह जाएगा। व्यक्ति ने फकीर की बात समझ ली।

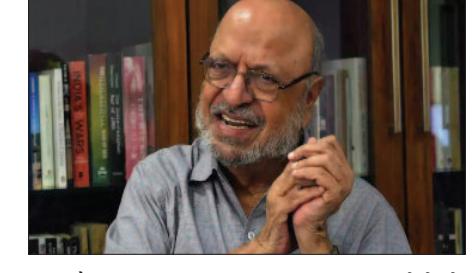
श्याम बेनेगल का जाना नये सिनेमा का अंत

फिल्मों के लिए भी काम किया है। श्याम ने बचपन में ही अपने फोटोग्राफर पिता श्रीधर बी. बेनेगल के कैमरे से पहली फिल्म शूट की थी। 1962 में उन्होंने पहली डॉक्यूमेंट्री फिल्म 'घर बैठा गंगा' बनाई, जो गुजराती में थी। बेनेगल को भारत सरकार द्वारा 1976 में पद्मश्री और 1991 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था। उनकी सफल फिल्मों में मंथन, जुबैदा और सरदारी बेगम शामिल हैं। जिनमें जीवन के कठोर यथार्थ को बेनेगल ने सिनेमा-शिल्प में, महीन अर्थवत्ता के साथ नाटकीयता के धनीभूत आशयों में अधिव्यक्ति दी, प्रस्तुति दी है। उनकी फिल्मों में एक ऐसी सार्वजनीनता है, जो धनी-निर्धन, शिक्षित-अशिक्षित, देशी-विदेशी सभी को बहुत भीतर तक स्पर्श करती रही है।

श्याम बेनेगल की आखिरी फिल्म 'मुजीबः द मेंकिंग ऑफ ए नेशन' थी, जिसका उन्होंने निर्देशन किया था। इस फिल्म ने भारत ही नहीं, बल्कि बांग्लादेश में भी सुर्खियां बटोरी। यह फिल्म बांग्लादेश के संस्थापक शैख मुजीबुर्रहमान पर आधारित थी, जो बांग्लादेश के राष्ट्रपति भी थे। उनकी जिदी पर बनी फिल्म ने बांग्लादेश में 2024 में तख्तापलट करवा दिया था और शेख हसीना को इस्तीफा देना पड़ा था। यह फिल्म दिखाती है कि मुजीबुर्रहमान के राजनीतिक सफर की शुरूआत कैसे हुई थी, उन्होंने किस तरह बांग्लादेश की स्वाधीनता के लिए काम किया। इस फिल्म को राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम और बांग्लादेश फिल्म विकास निगम ने मिलकर बनाया था। यह फिल्म जहां एक राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया को प्रस्तुति दी, वहीं दो राष्ट्रों के आपसी संबंधों को भी गहराई से उजागर किया। इस फिल्म को बांगली के साथ-साथ हिन्दी भाषा में भी रिलीज किया गया था। इस फिल्म का एलान करते हुए बेनेगल ने बताया था कि शेख मुजीबुर्रहमान के जीवन को पर्दे पर उतारना उनके लिए एक कठिन काम रहा है। उन्होंने कहा था, यह फिल्म मेरे लिए एक बहुत ही भावनात्मक फिल्म है। मुजीब के किरदार को बेबाकी से पेश किया है, वे भारत के बहुत अच्छे दोस्त रहे। उनकी यह फिल्म ही नहीं, बल्कि हर फिल्म ने एक इतिहास निर्मित किया। क्योंकि यह उनकी ही प्रतिभा थी कि वे लगातार काम करने की रणनीतियों में बदलाव लाते रहे और फिल्म-निर्माण को एक विराट फलक तक ले जाते रहे। भारतीय सिनेमा के लगभग सौ साला इतिहास में बेनेगल एक बड़े बटवृक्ष की भाँति दिखाई देते हैं। भारतीय सिनेमा को विश्व में नई और अद्वितीय पहचान दिलाने में बेनेगल का अविस्मरणीय योगदान था। बेनेगल की पहली चार फीचर फिल्मों- अंकर

(1973), निशांत (1975), मंथन (1976) और भूमिका (1977)- ने उन्हें उस दौर की नई लहर फ़िल्म अंदालन का अग्रणी बना दिया। बेनेगल की मुस्लिम महिला पर आधारित फ़िल्में मम्मो (1994), सरदारी बेगम (1996) और जुबैदा (2001) सभी ने हिंदी में सर्वश्रेष्ठ फीचर फ़िल्म के लिए राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार जीते। 1959 में, उन्होंने मुंबई स्थित विज्ञापन एजेंसी लिटास एडवरटाइजिंग में कांपोराइटर के रूप में काम करना शुरू किया, जहाँ वे धीरे-धीरे क्रिएटिव हेड बन गए। 1963 में एक अन्य विज्ञापन एजेंसी के साथ कुछ समय तक काम किया। इन वर्षों के दौरान, उन्होंने 900 से अधिक प्रायोजित वृत्तचित्र और विज्ञापन फ़िल्मों का निर्देशन किया। 1966 और 1973 के बीच बेनेगल ने पुणे स्थित भारतीय फ़िल्म और टेलीविजन संस्थान में पढ़ाया और दो बार संस्थान के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। उनके शुरूआती वृत्तचित्रों में से एक 'ए चाइल्ड ऑफ द स्ट्रीट्स' (1967) ने उन्हें व्यापक प्रशंसा दिलाई। कुल मिलाकर, उन्होंने 70 से अधिक वृत्तचित्र और लघु फ़िल्में बनाई हैं।

बेनेगल ने 1992 में धर्मवीर भारती के एक उपन्यास पर आधारित सूरज का सातवां घोड़ा फ़िल्म बनाई, जिसने 1993 में हिंदी में सर्वश्रेष्ठ फीचर फ़िल्म का राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार जीता। 1996 में उन्होंने फ़तिमा मीर की हाई अप्रेंटिसशिप ऑफ ए महात्माङ्क पर आधारित पुस्तक का मैकिंग ऑफ द महात्मा पर आधारित एक और फ़िल्म बनाई। उनके जीवनी सामग्री की ओर इस मोड़ के परिणामस्वरूप नेताजी सुभाष चंद्र बोस: द फॉर्गॉटन हीरो, उनकी 2005 में अंग्रेजी भाषा की फ़िल्म बनी। उन्होंने समर (1999) में बनी फ़िल्म में भारतीय जाति व्यवस्था की आलोचना की, जिसने सर्वश्रेष्ठ फीचर फ़िल्म का राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार जीता। बेनेगल की फ़िल्म मंडी (1983), राजनीति और वेश्यावृत्ति के बारे में एक व्यग्यपूर्ण कामिदी थी, जिसमें शबाना आजमी और स्मिता पाटिल ने अभिनय किया था। बाद में, 1960 के दशक की शुरूआत में गोवा में पुर्तगालियों के अंतिम दिनों पर आधारित अपनी कहानी पर काम करते हुए, श्याम ने त्रिकाल (1985) में मानवीय रिश्तों की खोज की। इन फ़िल्मों की सफलता के बाद, बेनेगल को स्टार शशि कपूर का समर्थन मिला, जिनके लिए उन्होंने जुनून (1978) और कलयुग (1981) बनाई। पहली फ़िल्म 1857 के भारतीय विद्रोह के अशांत काल के बीच की एक अंतर्राजातीय ऐप्स कहानी थी। जबकि दूसरी माझाभागत पर आधारित



थी और यह बड़ी हिट नहीं थी, हालांकि दोनों ने क्रमशः 1980 और 1982 में फिल्मफेयर सर्वश्रेष्ठ फिल्म पुरस्कार जीते। हजारों अविस्मरणीय किरदार और जिंदगी की असंख्य सच्चाइयों को खोलती उनकी फिल्में भारतीय सिनेमा की एक अमूल्य धरोहर हैं। एक समय ऐसा आया जब बेनेगल की फिल्मों को उचित रिलीज नहीं मिली। इसके चलते हुए उन्होंने टीवी की ओर रुख किया जहां उन्होंने भारतीय रेलवे के लिए यात्रा (1986) जैसे धारावाहिकों का निर्देशन किया और भारतीय टेलीविजन पर किए गए सबसे बड़े प्रोजेक्ट में से एक, जवाहरलाल नेहरू की पुस्तक डिस्कवरी ऑफ ईंडिया पर आधारित 53-एपिसोड का टेलीविजन धारावाहिक 'भारत एक खोज' (1988) का निर्देशन किया। इसी तरह टीवी सीरीयल 'संविधान' कहता है 'जोकर' एवं 'कथा साग' का निर्देशन भी किया। इससे उन्हें एक अतिरिक्त लाभ हुआ, क्योंकि वे 1980 के दशक के अंत में धन की कमी के कारण नया सिनेमा आंदोलन के पतन से बचने में कामयाब रहे, जिसके साथ कई नव-यथार्थवादी फिल्म का निर्माता रहे गया। बेनेगल ने अगले दो दशकों तक फिल्में बनाना जारी रखा। इथाम बेनेगल की फिल्म-प्रतिभा हमें चौकाती रही है, रोमांचित करती रही है, उकसाती रही है, क्योंकि उनकी फिल्मों की सबसे बड़ी खूबी यह है कि वे आम लोगों के जीवन की सच्चाई और उनके संघर्षों को प्रायाणिकता एवं जीवंतता के साथ प्रस्तुत करते रहे हैं। भारतीय जिंदगी के रंग बेशुमार है, कला-संस्कृति की अविस्मरणीय धाराएं हैं, अनूठा एवं बेजोड़ इतिहास और उसकी कहानियां भी अनंत-अथाह। बेनेगल का फिल्मी-युग भारत की खिड़की से विश्व को देखने एवं विश्व को भारत दिखाने की पहल का एक स्वर्णिम युग है। भारतीय सिनेमा दिग्दर्शन के इस विशिष्ट हस्ताक्षर श्याम बेनेगल के निधन से निश्चित ही एक सर्जनशील कलासाधक एवं सच्चाई को रूपहले पर्दे पर उतारने वाले सफल एवं सार्थक फिल्मकार का अंत हो गया।

'वीर बाल दिवस' शहादत की स्मृति



गोबिंद सिंह के छोटे बच्चों ने हिंदु धर्म और अपने आस्था की रक्षा करते हुए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए थे। बलिदान हिंदु धर्म के लिए सदा-सर्वदा स्मरणीय रहेगा।

स्तुत्य, यह उनके शौर्य, साहस और बलिदान की गाथा को याद करने का भी ह्यवीर बाल दिवसहूँ यह जानने का भी अवसर है। कि कैसे उनकी निर्मम शहीदी हुई और धर्म रक्षा, त्याग, समर्पण कैसा रहा? साहिबजादे जोरावर सिंह (9) और फतेह सिंह (7) सिख धर्म के सबसे सम्मानित शहीदों में से हैं। सप्राट औरंगजेब के आदेश पर मुगल सैनिकों द्वारा आनंदपुर साहिब को

धेर लिया गया। इस घटना में श्री गुरु गोबिंद सिंह के दो पुत्रों को पकड़ लिया गया। मुसलमान बनने पर उन्हें यातना और मारने की पेशकश की गई थी। इस पेशकश को उन दोनों ने तुकरा दिया जिस कारण उन्हें मौत की सजा दी गई और उन्हें जिंदा ईंटों की दीवार में चुनवा दिया गया। बाबा अजीत सिंह (17 वर्ष) और बाबा जुझार सिंह (13 साल) साका चमकैर साहिब में लड़ते, हँसते शाहीद हुए थे। इन शहीदों ने धर्म के महान सिद्धांतों से विचलित होने के बजाय मृत्यु को प्राथमिकता दी। शहीदी से ही धर्म, आस्था का यशोगान है।

प्रादुर्भाव, श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी के सबसे छोटे पुत्र, साहिबजादा बाबा जोरावर सिंह जी और साहिबजादा बाबा फतेह सिंह जी का जन्म आनंदपुर साहिब में हुआ था। चमकौर की लड़ाई के दिन, बाबा जोरावर सिंह, बाबा फतेह सिंह और उनकी दादी को मोरिडा के अधिकारियों जानी खान और मरी खान रंगहर ने हिरासत में ले लिया। अगले दिन उन्हें सरहिंद भेज दिया गया जहाँ उन्हें किले के ठंडे बुर्ज (ठंडा बुर्ज) में रखा गया। पिर बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह को फौजदार नवाब वजीर खान के

सामने पेश किया गया। फिर उसने उन्हें मौत की धमकी दी, लेकिन वे बेखौफ रहे। अंत में मौत की सजा सुनाई गई। वीरगति, उन्हें दीवार में जिंदा चुनवा देने का आदेश दिया गया। जैसे ही उनके कोपल शरीर के चारों ओर की चिनाई छाती की ऊंचाई तक पहुंची, वह ढह गई। साहिबजादों को रात के लिए फिर से ठंडे टॉवर में भेज दिया गया। 26 दिसंबर 1705 को बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह को दीवार में जिंदा चुनवाकर शहीद कर दिया गया। सरहिंद के पुराने शहर के पास स्थित इस भाग्यशाली घटना स्थल को अब फतेहगढ़ साहिब नाम दिया गया है, जहाँ अब पावन चार सिख तीर्थस्थल हैं। अलौकिक शहीदी, धर्म, न्याय, देश और मानव कल्याण, प्रेरणास्पद और अनुकरणीय है। शत-शत नमन! (पत्रकार व लेखक)

January						
S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

February						
S	M	T	W	T	F	S
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	

March						
S	M	T	W	T	F	S
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30	31					

April						
S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

May						
S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

June						
S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

2025

★ आरती ★

ॐ जय कलाधारी हरे, स्वामी जय पौणाहारी हरे।
भक्त जनों की नैया, भव से पार करे ॥ ॐ जय...
बालक उम्र सुहानी, नाम बालक नाथा-बाबा नाम बालक नाथा।
अमर हुए शिवजी से, सुनकर अमर गथा ॥ ॐ जय...
शीश पे बाल सुनैहरी, गल रुद्राक्षी माला-बाबा गल रुद्राक्षी माला।
हाथ में झोली-चिमटा, आसन मृग छाला ॥ ॐ जय...
सुंदर शैली, सिंगी, वैरागन सोहे - बाबा वैरागन सोहे।
गऊ पालक रखवाला, भक्तां दा मन मोहे ॥ ॐ जय...
अंग भभूत रमाई, मूर्ति प्रभु रंगी - बाबा मूर्ति प्रभु रंगी।
भय भंजन दुख नाशक, भरथरी के संगी ॥ ॐ जय...
रोट चढ़त रविवार को, फल मिश्री मेवा - बाबा फल मिश्री मेवा।
धूप, दीप, कुदनू से, आनंद सिद्ध देवा ॥ ॐ जय...
भक्तन हित अवतार लियो, बाबा देख के कलु-काला।
दुष्ट दमन, शत्रुघ्न, भक्तन प्रतिपाला ॥ ॐ जय...
तन-मन-धन सब है तेरा - बाबा सब कुछ है तेरा।
तेरा तुझको अर्पण, यही भाव हो मेरा ॥ ॐ जय...
बाबा जी की आरती जो कोई नित गावे - बाबा प्रेम सहित गावे।
कहते हैं सेवक तेरे, सुख सन्मति पावे॥ ॐ जय...
ॐ जय कलाधारी हरे, स्वामी जय पौणाहारी हरे।
भक्त जनों की नैया भव से पार करे ॥ ॐ जय...

July						
S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

August						
S	M	T	W	T	F	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

September						
S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

October						
S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

November						
S	M	T	W	T	F	S

</

